प्राचीन एवं मध्ययुगीन काव्य संचयन

उत्तर प्रदेश के समसत विश्वविद्यालयों के समान पाठ्यक्रम के अनुसार
बी०ए० प्रथम वर्ष हिन्दी साहित्य प्रथम प्रश्नपत्र हेतु पाठ्य-पुस्तक

डॉ0 चम्पा श्रीवास्तव
एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
फिरोज़ गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रायबरेली

प्रो0 रामदरश राय
प्रोफेसर हिन्दी विभाग
दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय
गोरखपुर

ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर

पुस्तक में पूरी सावधानी के बावजूद यदि कोई त्रुटि रह जाती है तो उससे होने वाली क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक और विक्रेता का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

⇨ **पुस्तक**

प्राचीन एवं मध्ययुगीन काव्य संचयन

⇨ **लेखक**

डॉ0 चम्पा श्रीवास्तव : प्रो0 रामदरश राय

⇨ **संस्करण**

2016 ई0

⇨ **मूल्य**

50.00 (पचास रुपये मात्र)

⇨ **प्रकाशक**

ज्ञानोदय प्रकाशन,पी0 रोड, कानपुर

⇨ **मुद्रक**

ज्ञानोदय प्रिंटर्स, गांधी ग्राम (त्रिमूर्ति मन्दिर परिसर), कानपुर

अनुक्रम

भूमिका **5-14**

संकलन के कवि **15-30**

संत कबीर 15

मलिक मुहम्मद जायसी 18

भक्त सूरदास 20

गोस्वामी तुलसीदास 23

बिहारीलाल 27

घनानन्द

संकलित कविताएँ **31-66**

संत कबीर 31-37

मलिक मुहम्मद जायसी 38-40

सूरदास 4-49

गोसवामी तुलसीदास 50-60

बिहारी 61-66

घनानन्द

द्रुत पाठ **67-72**

सरहपा

अब्दुर्रहमान

चन्दबरदाई

अमीर खुसरो 67

बी०ए० प्रथम वर्ष हिन्दी पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

निर्धारित कवि

कबीर - कबीर ग्रंथावली - प्रारम्भिक 50 साखी, सं0 पारसनाथ तिवारी

जायसी - पद्मावत का मानसरोदक खण्ड - सं0 रामचन्द्र शुक्ल

सूरदास - सूरसागर - प्रारम्भिक 25 पद, सं0 धीरेन्द्र वर्मा

तुलसीदास - रामचरित मानस का अयोध्या काण्ड (केवल चित्रकूट प्रसंग) दोहा संख्या 237 से 320 तक

बिहारी - बिहारी सतसई के प्रारम्भिक - 50 दोहे सं0 जगन्नाथदास रत्नाकर

घनानन्द - घनानन्द कवित्त -1, प्रारम्भिक 25 छन्द सं0 विश्वनाथ मिश्र

द्रुत पाठ - सरहपा, अब्दुर्रहमान, चन्दबरदाई, अमीर खुसरो

प्रश्न पत्र विवरण

- ⇨ अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रथम प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) **10×1 = 10 अंक**
- ⇨ अनिवार्य पाँच लघु उत्तीय प्रश्न (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से) **5×2 = 10 अंक**
- ⇨ कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या **2×6= 12 अंक**
- ⇨ बिहारी, घनानन्द के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या **1×6 = 6 अंक**
- ⇨ कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न **1×7 = 7 अंक**
- ⇨ बिहारी, घनानन्द पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न **1×5 = 5 अंक**

भूमिका

हिन्दी साहित्य के प्रथम व्यवस्थित इतिहास लेखक आचार्य शुक्ल ने अपने समय तक उपलब्ध साहित्य संपदानुसार भक्तिकाल का सीमांकन 1318 से 1643 ई0 किया है जिसे अध्ययन की सुविधा से हम 14वीं शती के मध्य से 16वीं शती के मध्य तक मान सकते हैं। ये दो सौ वर्ष भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से भी अत्यधिक निर्णायक एवं महती पीठिका से सम्पन्न वर्ष थे। इस काल के कवि केवल महान कवि के रूप में स्मृत किए जाते हैं यह सत्य नहीं है अपितु उनके अवदान का महत् कारण उनकी व्यापक सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का संवहन एवं प्रसरण है। साहित्य और समाज का, यथार्थ और आदर्श का ऐसा प्रगाढ़ सम्मिलन इतःपूर्व अदृष्ट था। इन कवियों ने जातीय काव्य का बिगुल फूँककर युग का सच्चे अर्थों में प्रतिनिधित्व किया है।

ज्ञातव्य है कि उत्तर भारत एक हजार वर्ष तक विदेशियों के अधिकार में रहा। हर्षवर्धन की मत्यु (सन् 686 ई0) के बाद भारत राजनैतिक रूप से अव्यवस्थित एवं विश्रृंखलित हो गया। 1194 ई0 में उत्तर भारत के सर्वाधिक प्रभावी शासक जयचंद भी पराजित हो गए। मुगलों ने भारतीय संस्कृति के केन्द्र 'गंगा-यमुनी' प्रदेश पर अपना आधिपत्य कर उसे पूर्णतः विसंस्कृत बना दिया। इख्तियारउद्दीन मुहम्मद-बिन बख्तियार खिल्जी ने बिहार पर आक्रमण कर वहाँ के बौद्ध बिहारों, पुस्तकालयों को ध्वस्त कर बंगाल तक मुस्लिम राज्य का विस्तार किया। इस प्रकार गुलाम वंश (1206-1290 ई0), खिलजी (1290-1320 ई0), तुगलक (1320-1412 ई0), सैयद और लोदी (1414-1526 ई0) वंश के राज्यकाल (लगभग 300 वर्षों) तक यही स्थिति रही जिससे जनता को स्वयं अपनी राजनैतिक चेतना का अनुकरण बल्लभाचार्य के 'कृष्णाश्रय' में मिलता है - 'म्लेच्छों से आक्रान्त देश पाप का आगार हो गया है सत्पुरुष पीड़ित हैं - - - गंगा आदि तीर्थ दुष्टों से आवृत्त हैं। ऐसी दशा में कृष्ण ही मेरी गति हैं।

सन् 1526 ई0 में बाबर की भारत विजय के बाद इस अवस्था में परिवर्तन का सूत्रपात हुआ और अकबर (1556 ई0-1605 ई0) ने तो मुसलमानी शासन का स्वरूप ही बदल दिया। एक सभ्य प्रशासन व्यवस्था लागू हुई। प्रजा ने सुरक्षा का अनुभव किया। धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ ही साहित्य, संगीत एवं विविध कलाओं को भरपूर प्रोत्साहन प्राप्त हुआ जिससे समाज में स्थिरता एवं शान्ति का वातावरण व्याप्त हुआ।

संगच्छध्वं-संवदध्वं की भावना से अनुप्रेरित हिन्दू-मुस्लिम प्रबुद्ध वर्ग एक समस्यापूर्ण जीवन की चाहना करने लगा था। लोक चेतना के पारखी सृजनधर्मियों ने समय की गति को पहचान सर्वधर्म साहित्य सृजन का प्रयास किया। उत्तर भारत में जिस समय सिद्ध और

था। दरबारी संस्कृति के अनुरूप हिन्दी के छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा खुसरो ने वैसे ही नवागत मुस्लिमों के लिए साहित्य तैयार किया जैसा फोर्ट विलियम कालेज में अंग्रेजों के लिए तैयार किया गया था। उल्लेखनीय है कि दोनों युगों में हिन्दुस्तानी का जन प्रचलित रूप ही सामने आया और किसी क्षेत्रीय बोली को आधार नहीं बनाया गया। इस प्रकार खुसरो ने भाषा-प्रयोग के क्षेत्र में एक नयी दृष्टि दी जिसे मुस्लिम दरबार में महत्व मिला और इसी का प्रभाव दक्षिण भारत पर पड़ा जहाँ दकनी हिन्दी का विकास हुआ।

खुसरो की देन

आधुनिक खड़ी बोली और उर्दू साहित्य का जो इतिहास हमारे समक्ष उपलब्ध है, उसके मूल रचनाकार अमीर खुसरो हैं। अमीर खुसरो ने उस नव विकसित भाषा रूप को हिन्दवी कहा है। खुसरो स्वयं फारसी के विद्वान् और रचनाकार थे। उन्होंने नवागत मुस्लिम शासकों और सैनिकों के लिए हिन्दुस्तानी शब्दों के ज्ञान के लिए 'खालिकवारी' तैयार की। फारसी में उन्होंने अनेक रचनाएँ कीं, जो भारत से ईरान तक समादृत हैं लेकिन इन सबसे बढ़कर उनका योगदान उस भाषा को साहित्यिक स्वरूप देना है जो आधुनिक युग की हिन्दी और उर्दू का आधार है।

वस्तुतः अमीर खुसरो का काल संक्रमण काल है। मुस्लिम साम्राज्य उस युग में व्यवस्थित हो रहा था और फारसी और दिल्ली की बोली को मिला कर हिन्दी का एक नया रूप विकसित हो रहा था। अमीर खुसरो के अन्तस् में छिपे साहित्यकार ने फारसी केसाथ- इस भाषा रूप को अपनाया जिसका प्रभाव दक्षिण भारत पर पड़ा और खुसरो की हिन्दवी दक्षिण में दक्खिनी नाम से साहित्यिक भाषा बनी। दक्खिनी हिन्दी पर फारसी का प्रभाव अधिक था जबकि खुसरो की भाषा पर हिन्दी खड़ी बोली का। दक्खिनी से ही परवर्ती उर्दू साहित्य का विकास हुआ।

जैसा कि कहा जा चुका है खुसरो फारसी के ख्यात साहित्यकार हैं। प्रारम्भिक हिन्दवी में उन्होंने साहित्यिक रचनाओं का प्रणयन कम किया है लेकिन भाषा रूप की दृष्टि से उनकी मुकरियों, ढकोसलों और पहेलियों का विशेष महत्व है। जब हिन्दी में क्षेत्रीय बोलियों के साहित्य की सृजन-प्रक्रिया नयी काव्य भाषा को तलाश रही थी और राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मैथिली भाषायें इस पद को प्राप्त कर रही थीं। तब खुसरो ने इस नयी काव्य भाषा को विकसित किया जो भारतेन्दु युग तक साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुयी।

▲▲▲